Q. सांख्य दर्शन की तत्व मीमांसा, ज्ञान मीमांसा तथा मूल्य मीमांसा की परिचर्चा कीजिए।

अथवा

दर्शन किसे कहते हैं दर्शन की विभिन्न शाखाओं का वर्णन कीजिए।

अथवा

तत्व मीमांसा पर आधारित शिक्षा का वर्णन कीजिए

उत्तर दर्शन का अर्थ:-

'दर्शन' शब्द का अर्थ वास्तव में गहराई से भरपूर है। इसका प्रयोग अनेक अर्थों में किया जाता है। दर्शन शब्द के अर्थ को समझने के लिए शाब्दिक, विशिष्ट और व्यापक अर्थ को समझना बहुत जरूरी है और उसके पश्चात विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं पर भी विचार किया जा सकता है।

(1) दर्शन का शाब्दिक अर्थ :-

दर्शन शब्द 'दृश' धातु से बना है जिसका अर्थ है 'देखना'। अर्थात् जिसके द्वारा देखा जाए अथवा जिसके द्वारा सत्य के दर्शन किए जाएं, वह दर्शन है। दर्शन शब्द की इस अनुभूति के आधार पर जीवन, संसार, जगदीश्वर (भगवान) से सम्बन्धित है, वह दर्शन है। हिन्दी का दर्शन अंग्रेजी भाषा के फिलोसफी का पर्याय है। अंग्रेजी भाषा के फिलोसफी की उत्पत्ति ग्रीक के दो शब्दों, फिलोस तथा सोफिया से हुई है। फिलोस का अर्थ है प्रेम या अनुराग और सोफिया का अर्थ है विद्या या ज्ञान। इस प्रकार फिलोसफी का अर्थ हुआ "ज्ञान के प्रति प्रेम या अनुराग।

व्याख्या :-

दार्शनिक वही है जो हर प्रकार का ज्ञान प्राप्त करने के लिए सदैव उत्सुक रहे, परन्तु उसकी ज्ञान-पिपासा कभी शान्त न हो। एक ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात् वह और भी ज्ञान प्राप्त करना चाहता है और सदा ज्ञान की खोज में लगा रहे।

प्लेटो के अनुसार :- "वह आंशिक ज्ञान का प्रेमी नहीं वरन् समूचे ज्ञान का प्रेमी होता है।"

दर्शन का विशिष्ट अर्थ :-

दर्शन का विशिष्ट अर्थ उस अमूर्त चिन्तन से है जिसके द्वारा आत्मा परमात्मा, जीव-जगत जन्म-मृत्यु तथा प्रकृति आदि का रहस्य मालूम किया जाता है। मनुष्य क्या है जीवन क्या है वास्तविक जीवन का उद्देश्य क्या है इस प्रकार की प्रकृति क्या है, सूर्य चन्द्रमा तथा सितारों आदि का मूल स्थान कौन सा है? व्यक्ति इस संसार में क्यों आया है। ईश्वर का स्वरूप क्या है मृत्यु क्या है क्या मानव जीवन व प्रकृति से परे कोई लोक है क्या मृत्यु के पश्चात कोई और जन्म होगा। इन प्रश्नों के अध्ययन को ही दर्शन कहते हैं चूंकि ये सभी बातें गूढ़ हैं इसलिए इनके विषय में चिन्तन तथा मनन करना एवं सत्य के वास्तविक रूप को समझना साधारण अल्प बुद्धि वाले व्यक्तियों की क्षमता से परे की बात है। यह महान व्यक्तियों का कार्य है।

3 दर्शन का व्यापक अर्थ :—

व्यापक अर्थ में "सत्य की खोज करना ही दर्शन है।" वे सभी व्यक्ति दार्शनिक हैं जो सत्य की किसी न किसी रूप में खोज करते रहते हैं। यदि ध्यान से देखा जाए तो पता चलेगा कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन की लम्बी यात्रा में जन्म से लेकर मृत्यु तक दिन-प्रतिदिन अनेक नये-नये अनुभव होते रहते हैं। इन अनुभवों के आधार पर उसे नवीनतम ज्ञान की प्राप्ति होती है। यही नहीं उसे हर समय यह जानने की इच्छा बनी रहती है कि अच्छे व बुरे, उचित तथा अनुचित, सत्य तथा झूठे, न्याय अथवा अन्याय में क्या अन्तर है? जैसे-2 किसी व्यक्ति को नये-नये अनुभव होते जाते हैं वैसे-वैसे उसके मस्तिष्क में क्या? क्यों? तथा कैसे? आदि प्रश्न उठते रहते हैं।

शापन हावर के शब्दों में

"संसार का प्रत्येक व्यक्ति जन्मजात दार्शनिक है।" (Erezyman is a born meta-Physician.)"

व्यापक अर्थ में दर्शन का अर्थ केवल आत्मा-परमात्मा, जीव-जगत और प्रकृति के स्वरूप की व्याख्या करने तक ही सीमित नहीं है। वरन् इसके अन्तर्गत मानव जाति, उसके द्वारा विकसित ज्ञान-विज्ञान, उसकी समस्याओं और उसकी भौतिक और अभौतिक उपलब्धियों की तर्कपूर्ण एवं क्रमबद्ध विवेचना सम्मिलित है। इस प्रकार दर्शन का सम्बन्ध मानव जीवन में चिन्तन ही दर्शन और विचार-विमर्श करने से है। आज प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन के लक्ष्यों, आदर्शों, मूल्यों और जिस जगत में वह रहता है उसके स्वरूप, लक्ष्यों, आदर्शों और मूल्यों के विषय में चिन्तन-मनन करता है, उनके विषयों में अपनी धारणायें बनाता है और यही धारणाएं उसका जीवन दर्शन कहलाती हैं। इन्हीं धारणाओं के अनुसार वह अपना जीवन व्यतीत करता है।

दर्शन की परिभाषाएं :-

1. ब्राइटमैन :- "दर्शन की परिभाषा एक ऐसे प्रयास के रूप में दी जा सकती है जिसके द्वारा सम्पूर्ण मानव अनुभूतियों के सम्बन्ध में सत्यता से विचार किया जाता है अथवा जो हमारी सम्पूर्ण अनुभूतियों को बोधगम्य बनाता है।"

उपर्युक्त दर्शन के विषय को निम्न प्रकार से प्रदर्शित किया जा सकता है:

- दर्शन
  - तत्व ज्ञान
    - आत्मा सम्बन्धी तत्व ज्ञान
    - ईश्वर सम्बन्धी तत्व ज्ञान
    - 3 सृष्टि सम्बन्धी तत्व ज्ञान
    - 4 सत्ता सम्बन्धी तत्व ज्ञान
    - 5 सृष्टि उत्पत्ति सम्बन्धी तत्व ज्ञान
  - ज्ञान शास्त्र
  - मूल्य शास्त्र
    - 1 नीति शास्त्र
    - 2 सौन्दर्य शास्त्र
    - 3 तर्क शास्त्र

तत्व मीमांसा

तत्वमीमांसा पर आधारित शिक्षा :-

तत्वमीमांसा का शिक्षा के उद्देश्यों एवं आदर्शों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इससे शिक्षा का मुख्य उद्देश्य चरित्र का विकास करना है। मनुष्य अपने जीवन में क्या बनना चाहता है। यह उसकी प्रकृति एवं स्थान पर निर्भर है।

स्वयं को पहचानो, यह कार्य है, तथा अपने आप को उसके अनुरूप बनाओ यह दूसरा। शिक्षा का सार्वभौम उद्देश्य यही है।

विश्व दर्शन की तत्व मीमांसा जितनी ज्यादा समन्वित होगी उस पर आधारित शिक्षा उतनी ही अधिक बहु-आयामी होगी। धार्मिक और नैतिक शिक्षा ईश्वर के अस्तित्व पर आधारित है। सद्वस्तु चाहे हम, उसे ईश्वर कहें अथवा अन्य किसी तत्व का नाम दें, तत्व मीमांसा में उसकी व्याख्या का शिक्षा के आदर्शों एवं उद्देश्यों पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

प्रयोजनवादी दर्शन का आधुनिक शिक्षा के क्षेत्र में सबसे अधिक प्रभाव है। इसी रूप में मानववाद तथा तकनीकी

शिक्षा दिखाई देती है। प्रयोजनवाद के अनुसार, तत्वमीमांसा विज्ञान और तकनीकी शिक्षकों को अधिक महत्व देता है। प्रकृतिवाद की तत्वमीमांसा में आगमन तथा वैज्ञानिक विधियों को शिक्षा के लिए उपयुक्त माना है। शिक्षा में तत्वमीमांसा का उल्लेख निम्नलिखित घटकों के रूप में किया गया है —

1. शिक्षा के लक्ष्य एवं उद्देश्य
2. पाठ्यक्रम
3. शिक्षा की विधियाँ एवं प्रविधियाँ
4. शिक्षा की प्रक्रिया
5. शिक्षक की भूमिका तथा अध्यापक छात्र सम्बन्ध।

(1) शिक्षा के लक्ष्य एवं उद्देश्य :—

लक्ष्य को एक क्रिया माना जाता है लक्ष्य की प्राप्ति क्रियाओं द्वारा की जाती है। उद्देश्य हमें शिक्षा देते हैं और इनके द्वारा क्रियाओं का बोध होता है तथा इसके साथ-साथ क्रियाओं के लिए दिशा-निर्देश भी देते हैं।

लक्ष्य और उद्देश्यों को बहुत बार एक-दूसरे के स्थान पर प्रयोग कर लेते हैं परन्तु दोनों में सार्थक अन्तर है उद्देश्य शब्द मनोविज्ञान तथा शिक्षा का है जबकि लक्ष्य शब्द

दर्शन का है। लक्ष्य की प्राप्ति उद्देश्य की सहायता के बिना नहीं की जा सकती। लक्ष्य का रूप अधिक व्यापक होता है और इसकी प्राप्ति में समय भी अधिक लगता है शिक्षा का लक्ष्य सत्यम् शिवम् सुन्दरम् की अनुभूति करना होता है।

शिक्षा के उद्देश्यों की दर्शनों के सन्दर्भ में समीक्षा:-

1 चरित्र का विकास:- सभी दार्शनिकों का मानना है कि शिक्षा से चरित्र का विकास होना चाहिए। इस मत का किसी भी दर्शन ने विरोध नहीं किया। चरित्र विकास का सीधा-का सम्बंध नैतिकता से है।

2 व्यक्ति का पूर्ण विकास:- अनेक दार्शनिकों ने शिक्षा के महत्व को व्यक्ति के सम्पूर्ण विकास में आवश्यक माना है। शिक्षा का स्वरूप ऐसा हो जिससे मनुष्य का आध्यात्मिक शारीरिक तथा मानसिक हो सके इसी कारण यह मनुष्य का सम्पूर्ण विकास कहलाएगा।

१. सम्पूर्ण जीवन की तैयारी का उद्देश्य :-
हरबर्ट स्पेन्सर को प्रकृतिवादी दर्शन का मुख्य विद्वान मानते हैं, वे उन्होंने "शिक्षा का मुख्य कार्य व्यक्ति को पूर्ण जीवन के लिए तैयार करना बतलाया है।"
हरबर्ट के अनुसार विज्ञान का ज्ञान जीवन की आवश्यकता है। इसके साथ-2 आधुनिक युग में तकनीकी ज्ञान का समावेश करना ताकि बालक सभी क्षेत्रों में परिपूर्ण हो, वह पाठ्यक्रम में भाषा, साहित्य एवं मानवीय अध्ययन के विषयों को शामिल करने के विरुद्ध नहीं थे।

२. शिक्षा के व्यवसायिक उद्देश्य :-
आज के युग में इस उद्देश्य को अलग-से महत्व दिया जाने लगा गया है। प्रकृति के अनुसार स्वस्थ रहना प्रथम नियम है और जीव-विज्ञान के अनुसार भी शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना ही जीवन की आवश्यकता है।

३. व्यक्तिगत विकास का उद्देश्य :-
जब व्यक्ति अपना व्यक्तिगत विकास नहीं कर पाएगा तो वह दूसरों की सहायता किस प्रकार करेगा। इस प्रकार हम देखते हैं कि शिक्षा बाल-केन्द्रित

होनी चाहिए शिक्षा बालक के लिए है न कि बालक शिक्षा के लिए अर्थात शिक्षा में बालक की रुचियों अभिरुचियों को प्रथम स्थान देना चाहिए।

सामाजिक उद्देश्य :-

मुख्यत: सामाजिक उद्देश्य का अर्थ है: राज्य का विकास तथा व्यक्तिगत सामाजिक क्षमताओं का विकास।

राज्य का विकास तभी होगा जब बालक अपने आप को राष्ट्र कल्याण में समर्पित करेगा और राष्ट्रीय हित को सर्वोच्च प्राथमिकता देगा

शिक्षा का पाठ्यक्रम :-

आदर्शवाद के अनुसार शिक्षा के पाठ्यक्रम में उस ज्ञान को लिया जाए जिससे बालक का मानसिक आध्यात्मिक तथा शारीरिक विकास हो सके। इस प्रकार शिक्षा का पाठ्यक्रम बालक का सुसंगत विकास करने वाला होना चाहिए।

प्रयोजनवादियों के अनुसार पाठ्यक्रम में सामाजिक समस्याओं को प्राथमिकता दी जाए और पाठ्यक्रम अनुभव केन्द्रित तथा समस्या केन्द्रित होना चाहिए। इसमें

समन्वित पाठ्यक्रम को विशेष महत्व दिया गया जबकि इस दर्शन की कोई तत्वमीमांसा नहीं है।

रूसो ने अपनी पुस्तक 'एमिल' में अलग-अलग स्तर के बच्चों के लिए अलग-अलग पाठ्यक्रम अपनाने की सलाह दी है। नारी को ये पुरुष की सहचरी एवं सेविका के रूप में स्वीकार करते थे, इसलिए उन्हें गृहकार्य में निपुण करना चाहते थे।

8 ~~शिक्षा~~ शिक्षण विधियाँ प्रविधियाँ एवं सूत्र :-

प्रकृतिवाद तत्वमीमांसा को एक दर्शन मानते हैं। इसके अनुसार आगमन चिंतन को निगमन की अपेक्षा प्राथमिकता दी गई है। आगमन शिक्षण की मूल विधि है और इसी के विस्तार से अनेक शिक्षण विधियों तथा प्रविधियों का विकास हुआ है प्रकृतिवाद का शिक्षण शास्त्र में महत्वपूर्ण योगदान है।

रूसो के अनुसार बच्चों को स्वयं करके सीखना चाहिए। रूसो कहा करते थे, इनको मौखिक पाठ मत पढ़ाओ, इनको अपने अनुभवों द्वारा सीखने दो।

प्रमुख शिक्षण विधियाँ इस प्रकार हैं:-

1 निरीक्षण विधि
2 प्रदर्शन विधि
3 खेल विधि
4 प्रयोगात्मक विधि
5 कहानी विधि
6 प्रयोगशाला विधि
7 अन्वेषण विधि
8 क्षेत्रीय विधि
9 गृहकार्य विधि
10 समीक्षात्मक विधि।

4. अध्यापक की भूमिका:-

शिक्षा में बालक का सर्वप्रथम स्थान है इस शिक्षा व्यवस्था में अध्यापक का स्थान गौण है। प्रकृतिवाद के अनुसार अध्यापक का कार्य पढ़ाना सूचनाएँ देना नहीं है। उसका कार्य व्यवस्था करना नहीं है। उसको छात्रों का जीवन मोड़ने का अधिकार नहीं है उसका कार्य तो केवल बालक के स्वतः विकास में सहायता करना अन्य किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।

अध्यापक केवल पर्दे के पीछे रहता है माली की तरह कार्य करता है अध्यापक कभी भी छात्रों पर रोब या जमाएँ तथा न ही अपने विचार विद्यार्थियों पर थोपने की कोशिश करें।

ज्ञान मीमांशा पर आधारित शिक्षाएं

उत्तर परिचय:-

शिक्षा द्वारा बालकों को ज्ञान दिया जाता है, इस कारण शिक्षा का सीधा संबंध ज्ञान मीमांसा से होता है। ज्ञान प्राप्त करने की अलग-2 विधियाँ दार्शनिकों द्वारा अपनाई गई हैं जिनके आगमन और निगमन दो दार्शनिक विधियें हैं जिसमें संश्लेषण और विश्लेषण को प्रयुक्त किया जाता है। इस प्रकार ज्ञान शास्त्र के सभी दार्शनिक ज्ञान की विधियाँ सीमाएँ तथा मूल्य बतलाकर सभी प्रकार के ज्ञान के लिए अलग-2 आवश्यक आधार प्रस्तुत करते हैं।

आदर्शवादी, ज्ञानमीमांसा एवं शिक्षा:-

आदर्शवादियों के अनुसार मन द्वारा ही ज्ञान सम्भव है। आदर्शवादी मन तथा पदार्थ को अधिक महत्व देते हैं। ज्ञान, ज्ञाता व ज्ञेय में भिन्नता नहीं है। ज्ञान, ज्ञाता मन के ऊपर निर्भर करता है। वास्तविक ज्ञान और विचारात्मक ज्ञान में कोई अन्तर नहीं है, दोनों एक-दूसरे के सापेक्ष-2 हैं। यह ज्ञान

चिन्तन, तर्क - वितर्क तथा मनन आदि द्वारा प्राप्त किया जाता है।

ज्ञान मीमांसा के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य एवं लक्ष्य :-

① सुकरात ने ज्ञान को अच्छे गुणों की संज्ञा दी है। इसी प्रकार शंकराचार्य ने ज्ञान को मुक्ति का साधन बताया है। हर्ब ने ज्ञान को समायोजन का साधन बताया है।

2. शिक्षा का उद्देश्य मानवता की भावना का विकास करना है।
3. सत्यम, शिवम, सुन्दरम का विकास शिक्षा द्वारा ही सम्भव है।
4. सांस्कृतिक एवं सामाजिक क्षमताओं का विकास करना।
5. आत्मानुभूति का विकास।

शिक्षा के लक्ष्यों में संश्लेषण पर अधिक बल दिया गया है। हर्ब ने अपनी पुस्तक मनोविज्ञान का सिद्धान्त में शिक्षा के बारे में लिखा है कि "शिक्षा परक आदर्शों में सभी ऐतिहासिक आदर्शों को जहाँ परम सत्य पाया जाता है अवश्य शामिल करना चाहिए।"

1. शारीरिक तथा व्यक्तिगत व्यक्तित्व का विकास :-
फ्रेबेल ने कितनी थी

रचना रची है उनमें मानव 'ईश्वर' की सबसे सुन्दर एवं महान कृति है। इस कारण मानव व्यक्तित्व का विकास करना शिक्षा का पहला लक्ष्य होना चाहिए। उन्होंने शारीरिक शिक्षा को साधन माना है साध्य नहीं।

2. सामाजिक और सांस्कृतिक विकास:-

सामाजिक और सांस्कृतिक धरोहर को पीढ़ी बनाए रखना शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए। मीमांसा में मानव और प्रकृति के आपसी मेल पर बल दिया गया है। शिक्षा का उद्देश्य बालक को इन निश्चित नियमों से अवगत कराना है जिससे वह समाज और संसार में आपसी ताल-मेल बैठा सके। शिक्षा का उद्देश्य मानव को सांस्कृतिक और सामाजिक गतिविधियों को पहचानना उनका विकास करना माना गया है

3. नैतिक और चरित्र का विकास:-

प्लेटो के अनुसार मनुष्य का आखरी उद्देश्य आत्मानुभूति है और इसके लिए सत्यम् शिवम् सुन्दरम् की प्राप्ति आवश्यक है तथा इन मूल्यों की प्राप्ति के लिए नैतिक जीवन जीना आवश्यक है।

ज्ञान मीमांसा की दृष्टि से सार्वभौम लक्ष्यों पर अधिक बल दिया है। रॉस के अनुसार, "शिक्षा का कार्य हमें परम और सार्वभौम मूल्यों की खोज करने में सहायता देता है ताकि विश्व का सत्य मानव का सत्य बन सके और हमें शान्ति प्राप्त हो सके।"

4 अच्छे नागरिकों का विकास :-
प्लेटो के अनुसार, "राज्य का शासन चलाने के लिए अच्छे नागरिक व्यापारी, सैनिक, सेवक तथा शासक सभी चाहिए। शिक्षा का उद्देश्य राज्य के लिए श्रेष्ठ नागरिकों का निर्माण करना होना चाहिए इस प्रकार के नागरिक राज्य के प्रति समर्पित होते हैं।

5 मानसिक तथा बौद्धिक विकास :-
बौद्धिक विकास के बिना मनुष्य सही तथा गलत, सत्य और असत्य के बीच फर्क नहीं समझ सकता और न ही वह विकास के बारे में सोच सकता है। बौद्धिक विकास के द्वारा ही व्यक्ति में तर्क, वितर्क, सूझ-बूझ आदि का विकास होता है। जर्मन दार्शनिक बोल्ट बौद्धिक विकास को ही मनुष्य जीवन का सबसे जरूरी पहलू मानते थे।

6 आध्यात्मिक विकास :- आदर्शवादी ज्ञानमीमांसा की सोच के अनुसार शिक्षा का अन्तिम लक्ष्य आध्यात्मिक विकास है। अध्यात्मिक विकास का अर्थ है आत्मानुभूति का विकास करना जिसमें भाव-पक्ष प्रधान होता है।

शिक्षण की प्रक्रिया :-

ज्ञानमीमांसा के अन्दर, ज्ञान स्त्रोतों तथा ज्ञान स्वरूप को विशेष महत्व दिया जाता है। ज्ञान की प्रक्रिया सत्ता और ज्ञेय के साथ आरम्भ होती है अर्थात इसके दो ध्रुव होते है - 1 अध्यापक 2 छात्र। शिक्षा प्रक्रिया दोनो के आपसी सहयोग से चलती है। आज के युग में शिक्षा त्रिध्रुवीय या त्रिपदी प्रक्रिया बन गई है

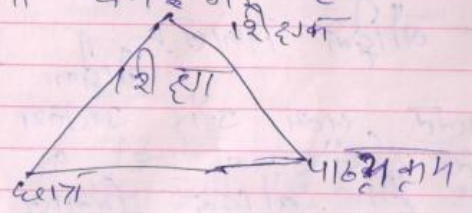

इसमें हर एक का अपना महत्व होता है इसमें शिक्षक को अधिक स्वतन्त्रता नही होती, शिक्षक पाठ्यक्रम के अनुसार छात्रों को शिक्षा देता है।

विद्यालय समाज की आवश्यकताओं के अनुसार कार्य करता है और समाज का लघु रूप माना जाता है। ज्ञान की दृष्टि से शिक्षा प्रक्रिया में तीन बिन्दुओं को विशेष महत्व दिया गया है—

1 अनुदेश 2. अनुभव 3 आत्म क्रिया।

4 शिक्षा का पाठ्यक्रम :—

पाठ्यक्रम आदर्श समाज के लिए आदर्श चरित्रों को ध्यान में रखकर बनाया जाता है। पाठ्यक्रम में दोनों प्रकार के विषय सामान्य तथा व्यावसायिक विषयों को शामिल किया गया है। मानव मस्तिष्क की तीन आवश्यकताएँ — 1 जानने की करने की तथा संवेदना की। इस कारण पाठ्यक्रम को भी तीन भागों में बाँटा गया है विज्ञान, सामाजिक तथा सौन्दर्य कलाएँ। विज्ञान तथा सामाजिक विषयों में ज्ञानात्मक पक्ष का महत्व दिया गया है जबकि सौन्दर्य कला और साहित्य में भावपक्ष को मुख्य माना गया है।

समाज परिवर्तन शील है और पाठ्य क्रम की रचना समाज की बदलती हुई आवश्यकताओं के अनुरूप होनी चाहिए। पाठ्यक्रम का स्वरूप स्थिर नहीं रहता वह हमेशा बदलता रहता है। इस प्रकार पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए जो मनुष्य को मानव समाज की आवश्यकताओं, परम्पराओं तथा विरासत से परिचित कराए और विरासत को पूरा योगदान देने के योग्य बनाए।

शिक्षण विधियाँ:-

दार्शनिकों ने शिक्षण की अनेक विधियों का उल्लेख किया है। परन्तु आदर्शवाद को ज्ञानमीमांसा का दर्शन माना गया है इसलिए पुराने आदर्शवादी प्लेटो एवं सुकरात की विधियाँ - तार्किक विधि, वाद-विवाद, प्रवचन तथा प्रश्नोत्तर विधियों को अधिक महत्व दिया गया है।

ज्ञानमीमांसा में शिक्षण की निम्नलिखित विधियों का भी वर्णन किया गया है।

1 प्रश्नोत्तर विधि
2 निगमन शिक्षण विधि
3 अनुकरण विधि
4 वाद-विवाद विधि
5 प्रवचन विधि
6 स्व: क्रिया विधि
7 पर्यटन विधि
8 विश्लेषण विधि इत्यादि।

अध्यापक की भूमिका:-

ज्ञानमीमांसा की दृष्टि से शिक्षक की भूमिका एक दार्शनिक के रूप में मानी गई है। शिक्षक को अपने विषय का पूरा ज्ञान होता है तथा ज्ञान-दान वह शिक्षण कार्यों के प्रति भी पूरा निष्ठावान होता है तथा शिक्षण व्यवसाय को वह अपनी इच्छा से अपनाता है। शिक्षा की प्रक्रिया में शिक्षक का सबसे ऊँचा स्थान है।

बालक को करके सीखने की क्रियाओं में क्रियाशील रखा जाए। शिक्षक को चाहिए कि वह मूल्य परक शिक्षा पर अधिक बल दे।